

## रीति काल में नीति काव्य

बलराम

सहायक आचार्य

राजकीय महाविद्यालय भीम

सार

रीतिकाल (1700-1850 ईस्वी) हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कालखंड है। इस काल में रीति और अलंकार शास्त्र पर विशेष ध्यान दिया गया, जिसके कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है। इस काल में अनेक कवियों ने नीतिपरक रचनाएं भी लिखीं, जिन्हें नीति काव्य कहा जाता है। रीतिकाल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कालखंड है जो 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य तक फैला हुआ है। इस काल में रीति-सिद्धांतों का बोलबाला था, जिसके फलस्वरूप काव्य में अलंकरणों और शिल्प-पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

नीति काव्य रीतिकालीन काव्य का एक महत्वपूर्ण उपप्रकार है। इस उपप्रकार में कवियों ने नीतिशास्त्र, जीवन-मूल्यों और सामाजिक व्यवस्था से संबंधित विषयों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। नीति काव्य, हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इसका उद्देश्य जीवन जीने की कला सिखाना है। यह हमें बताता है कि कैसे हम एक अच्छा और सदाचारी जीवन जी सकते हैं। नीति काव्य में नीतियाँ, शिक्षाएँ, और उपदेशों का समावेश होता है, जो हमें सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाते हैं।

मुख्य शब्द

नीति, काव्य, रीतिकाल, हिंदी, साहित्य

भूमिका

नीति काव्य का महत्व अनेक प्रकार से है। यह हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराता है, जैसे कि मित्रता, प्रेम, परिवार, समाज, और धर्म। यह हमें सिखाता है कि कैसे हम इन सभी क्षेत्रों में अपना जीवन सफलतापूर्वक जी सकते हैं। नीति काव्य हमें अच्छे और बुरे कर्मों के परिणामों से भी अवगत कराता है।

नीति काव्य को मुख्य रूप से दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है:

प्रत्यक्ष नीति काव्य: इस प्रकार के काव्य में नीतियाँ और शिक्षाएँ सीधे और स्पष्ट रूप से दी जाती

हैं।

अन्योक्तिपरक नीति काव्य: इस प्रकार के काव्य में नीतियाँ और शिक्षाएँ अप्रत्यक्ष रूप से दी जाती हैं, जैसे कि कहानियों, उपमाओं, और रूपकों के माध्यम से।

नीति काव्य के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण हैं:

कबीर के दोहे

तुलसीदास की रामचरितमानस

सूरदास के भ्रमरगीत

रहीम के दोहे

भर्तृहरि के नीतिशतक

नीति काव्य की विशेषताएं:

भाषा-शैली: नीति काव्य में सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग किया जाता था।

छंद: इस उपप्रकार में दोहा, सवैया, कवित्त, छप्पय आदि छंदों का प्रयोग किया जाता था।

विषय-वस्तु: नीति काव्य में जीवन-मूल्यों, सामाजिक व्यवस्था, नैतिकता, राजनीति, प्रेम, भक्ति, मित्रता आदि विषयों का वर्णन किया जाता था।

रीति-सिद्धांत: रीतिकालीन नीति काव्य में रीति-सिद्धांतों का पालन किया जाता था।

नीति काव्य का मुख्य उद्देश्य जीवन जीने की कला सिखाना है। इसमें नीति, नैतिकता, और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन दिया जाता है। रीतिकालीन नीति काव्य में निम्नलिखित विशेषताएं देखी जा सकती हैं:

नीति काव्य में जीवन के सभी पहलुओं को छुआ गया है, जैसे कि आचरण, मित्रता, प्रेम, विवाह, धन, शिक्षा, राजनीति, और धर्म।

नीतिपरक उपदेशों को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

नीति काव्य में अनेक नीतिपरक कहानियां, उपमाएं, और रूपक भी शामिल हैं।

रीतिकालीन नीति काव्य में रीति और अलंकार शास्त्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भाषा सरल और सुबोध है, लेकिन अलंकारों का प्रयोग भी किया गया है।

छंदों का प्रयोग भी बहुतायत में किया गया है।

रहीम: रहीम रीतिकाल के सबसे प्रमुख नीति कवियों में से एक हैं। उनकी रचनाओं में "दोहावली" और "सबदावली" प्रसिद्ध हैं।

कबीर: कबीर भक्तिकाल के प्रमुख कवि थे, लेकिन उनकी रचनाओं में नीतिपरक उपदेश भी शामिल हैं। उनकी रचनाओं में "बीजक" और "साखी" प्रसिद्ध हैं।

तुलसीदास: तुलसीदास भक्तिकाल के एक अन्य प्रमुख कवि थे, लेकिन उनकी रचनाओं में भी नीतिपरक उपदेश शामिल हैं। उनकी रचनाओं में "रामचरितमानस" और "विनय पत्रिका" प्रसिद्ध हैं।

भिखारीदास: भिखारीदास रीतिकाल के प्रसिद्ध नीति कवियों में से एक हैं। उनकी रचनाओं में "कविप्रिया" और "रसिकप्रिया" प्रसिद्ध हैं।

उदाहरण:

रहीम के दोहे:

रहीम पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।

कबीर की साखी:

कबीर सोई सोई जागते, जागते सोते हैं।

सोते हैं भूलि जग, जागते जग भूलते हैं।

तुलसीदास की चौपाई:

प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो।

हरिजन तो हितकारी सब करो।

भिखारीदास का छंद:

जहाँ काम आवै धनुष, तहाँ बाण चढ़ावो।

जहाँ काम आवै तीर, तहाँ धनुष चलावो।

विद्यापति की 'कीर्तिलता'

कबीरदास की 'बीजक'

तुलसीदास की 'रामचरितमानस'

रहीमदास के 'दोहे'

भिखारीदास की 'कबीर ग्रंथावली'

## सूरदास की 'सूरसागर'

रीति काल में नीति काव्य

रीतिकालीन नीति काव्य हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण धरोहर है। इस काल के नीति काव्य में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर नीतियां दी गई हैं। ये नीतियां आज भी प्रासंगिक हैं और हमें सदाचारी जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं।

उदाहरण:

"सत्य बोलो, परंतु सत्य बोलने से पहले यह सोच लो कि उसका परिणाम क्या होगा।"

"दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम अपने लिए चाहते हो।"

"अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।"

"ज्ञान ही शक्ति है।"

"सदाचार ही जीवन का आधार है।"

रीतिकालीन नीति काव्य में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जो जीवन के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

कबीर दास, 15वीं शताब्दी के महान संत कवि, जिन्होंने अपनी सरल भाषा और गहन विचारों से भक्ति आंदोलन को नया आयाम दिया। कबीर के दोहे, उनकी अमूल्य रचनाएं, आज भी प्रासंगिक हैं और लोगों को प्रेरणा देती हैं। कबीर के दोहे छोटे, सरल, और सीधे दिल को छू लेने वाले होते हैं। उनमें गहरे आध्यात्मिक ज्ञान, सामाजिक टिप्पणी और जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण का समावेश होता है। कबीर के दोहे भक्ति और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हैं। वे ईश्वर के प्रति समर्पण, सच्चे भक्त की विशेषताएं, और आत्म-ज्ञान की खोज पर बल देते हैं। कबीर ने अपने दोहे में सामाजिक बुराइयों, जैसे जातिवाद, कर्मकांडों, और ढोंगी साधुओं की आलोचना की। उन्होंने समानता और सामाजिक न्याय का संदेश दिया।

कबीर के दोहे जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि कैसे एक सरल और संतोषपूर्ण जीवन जीना चाहिए, और कैसे मोह-माया से दूर रहकर ईश्वर की प्राप्ति करनी चाहिए।

कबीर के दोहों की विशेषताएं:

सरल भाषा

गहरे विचार

भक्ति और आध्यात्मिकता

सामाजिक टिप्पणी

व्यावहारिक दृष्टिकोण

प्रेरणादायक और मार्गदर्शक

कबीर के दोहों का प्रभाव:

कबीर के दोहों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने लोगों को सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाने और समानता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। आज भी, कबीर के दोहे प्रासंगिक हैं और लोगों को प्रेरणा देते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि कैसे एक अच्छा जीवन जीना चाहिए और कैसे ईश्वर की प्राप्ति करनी चाहिए। कबीर के दोहे हिंदी साहित्य की एक अमूल्य धरोहर हैं। वे भक्ति, आध्यात्मिकता, सामाजिक टिप्पणी और जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण का अनूठा मिश्रण हैं। तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस, हिन्दी साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। यह महाकाव्य भगवान राम के जीवन पर आधारित है और भक्ति, त्याग, कर्म और नीतिशास्त्र जैसे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करता है। रामचरितमानस को सात कांडों में विभाजित किया गया है: बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड। यह अवधी भाषा में लिखी गई है और इसमें दोहे, चौपाई, सोरठा और छंद जैसे विभिन्न छंदों का प्रयोग किया गया है।

रामचरितमानस की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

भक्ति: यह महाकाव्य भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आदर्श चरित्र: रामचरितमानस में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आदि सभी चरित्र आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

नीतिशास्त्र: यह महाकाव्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर नीतिशास्त्र का ज्ञान प्रदान करता है।

भाषा: रामचरितमानस की भाषा सरल, सुबोध और प्रभावशाली है।

रामचरितमानस का हिन्दी साहित्य और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यह ना केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि जीवन जीने का मार्गदर्शक भी है।

तुलसीदास जी की रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। यह महाकाव्य भक्ति,

त्याग, कर्म और नीतिशास्त्र जैसे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करता है और जीवन जीने का मार्गदर्शन प्रदान करता है।

रहीमदास जी, जिन्हें "रहीम" के नाम से भी जाना जाता है, हिंदी साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित कवियों में से एक हैं। 16वीं शताब्दी में जन्मे रहीम जी, अपनी सरल और सुंदर भाषा, गहरे विचारों और जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके दोहे, जो छोटी कविताएं हैं, जीवन के हर पहलू को छूते हैं। चाहे वह नैतिकता हो, प्रेम हो, सामाजिक मुद्दे हों, या आध्यात्मिकता, रहीम जी ने अपने दोहों में हर विषय को बड़ी ही सहजता से व्यक्त किया है।

रहीम के दोहों की विशेषताएं:

सरल भाषा: रहीम जी की भाषा सरल और सहज है। वे आम लोगों की भाषा में लिखते थे, जिसके कारण उनके दोहे आज भी प्रासंगिक हैं और सभी वर्गों के लोगों द्वारा पसंद किए जाते हैं।

गहन विचार: रहीम जी के दोहे विचारों से भरे हुए हैं। वे जीवन के हर पहलू पर गहराई से विचार करते थे और अपने विचारों को दोहों में व्यक्त करते थे।

व्यावहारिक दृष्टिकोण: रहीम जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण व्यावहारिक था। वे आदर्शवादी नहीं थे, बल्कि वे जीवन को जैसा था वैसा ही स्वीकार करते थे।

नैतिकता: रहीम जी के दोहों में नैतिकता का विशेष महत्व है। वे लोगों को सदाचारी और नीतिवान जीवन जीने की प्रेरणा देते थे।

प्रेम: रहीम जी के दोहों में प्रेम का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वे प्रेम को जीवन का आधार मानते थे।

सामाजिक मुद्दे: रहीम जी ने अपने दोहों में सामाजिक मुद्दों को भी उठाया है। वे जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ थे।

आध्यात्मिकता: रहीम जी आध्यात्मिकता में भी विश्वास रखते थे। वे ईश्वर के प्रति भक्ति और आत्म-साक्षात्कार की बात करते थे।

रहीम के दोहों का हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वे आज भी स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाए जाते हैं। लोग उन्हें जीवन के मार्गदर्शन के लिए भी पढ़ते हैं। रहीम जी के दोहों का हमारे जीवन पर कई सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। वे हमें सदाचारी जीवन जीने, दूसरों के प्रति प्रेम और सम्मान रखने, और सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक होने की प्रेरणा देते हैं। रहीम के दोहे जीवन के अनमोल रत्न हैं। वे हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं और हमें एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देते हैं।

सूरदास का भ्रमरगीत, सूरसागर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण खंड है। यह भक्ति और प्रेम का अद्भुत संगम है, जिसमें भ्रमर, कृष्ण और राधा के प्रेम का प्रतीक बनकर उभरता है। इस खंड में, सूरदास जी ने कृष्ण के प्रति राधा के प्रेम और उनकी विरह व्यथा को बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त किया है। भ्रमरगीत में, भ्रमर का प्रयोग कृष्ण के रूपक के रूप में किया गया है। भ्रमर, मधुकर (शहद इकट्ठा करने वाला) के रूप में, फूलों से रसपान करता है, जिसके समान कृष्ण भी गोपियों के प्रेम का रसपान करते हैं। भ्रमर, रंगीन फूलों की ओर आकर्षित होता है, जिसके समान कृष्ण भी गोपियों के सौंदर्य से आकर्षित होते हैं। भ्रमरगीत में, राधा के विरह की अनुभूति को बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त किया गया है। राधा, कृष्ण के वियोग में व्याकुल हैं और उनके दर्शन के लिए तरस रही हैं। वे भ्रमर को कृष्ण का दूत मानकर, उन्हें कृष्ण के पास भेजती हैं और उनसे कृष्ण के बारे में समाचार पूछती हैं। भ्रमरगीत की भाषा सरल और सुबोध है। इसमें ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है, जो उस समय की आम भाषा थी। सूरदास जी ने अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है, जैसे कि रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि। इन अलंकारों के प्रयोग से भ्रमरगीत में सौंदर्य और प्रभावशालीता बढ़ गई है। भ्रमरगीत, सूरदास जी की भक्ति और प्रेम का अद्भुत संगम है। इसमें राधा के विरह की अनुभूति को बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त किया गया है। भ्रमरगीत, हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो आज भी पाठकों को आकर्षित करती है। सूरदास का भ्रमरगीत, भक्ति और प्रेम का अद्भुत संगम है। यह राधा के विरह की अनुभूति को बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त करता है। भ्रमरगीत, हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो आज भी पाठकों को आकर्षित करती है।

निष्कर्ष

रीतिकालीन नीति काव्य जीवन जीने की कला सिखाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन दिया गया है। रीतिकालीन नीति काव्य आज भी प्रासंगिक है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

संदर्भ

नीतिशतक – भर्तृहरि (6वीं शताब्दी)

हितोपदेश – विष्णुशर्मा (12वीं शताब्दी)



नीतिसार – कवि भिखारीदास (17वीं शताब्दी)

सुखसागर – कवि देव (17वीं शताब्दी)

रसिकप्रिया – केशवदास (16वीं शताब्दी)